ओ३म्



सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला

समुल्लास 12 पर आधारित

बौद्ध और जैन मत

प्रकाशक : आर्य समाज, अजमेर मूल्य 3.00

Scanned with CamScanner

प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले (आर्य) द्वारा सपादित
सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला के 15 पुष्प

भाग	नाम	लेखक का नाम	मूल्य
1.	ईश्वर एक नाम अनेक	प्रो. बुद्धि प्रकाश आर्य	3.00
2.	आदर्श माता–पिता	प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु	3.00
3.	शिक्षा और चरित्र निर्माण	प्रो. भूदेव शास्त्री	4.00
4.	गृहस्थाश्रम का महत्त्व	आचार्य ओंकार मिश्र प्रणव	3.00
5.	संन्यासी कौन और कैसे हो ?	रासासिंह विद्यावाचस्पति	3.00
6.	राज्य व्यवस्था	प्रो. प्रशान्त कुमार वेदालंकार	5.50
7.	ईश्वर और वेद	डॉ. सूर्यदेव शर्मा, डी. लिट्	4.00
8.	जगत् की उत्पत्ति	डा. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती	4.00
9.	स्वर्ग और नरक कहाँ है ?	पं. यशपाल, आर्य बन्धु	4.00
10.	क्या चौके चूल्हे में धर्म है ?	प्रो. देव शर्मा वेदालंकार	3.00
11.	हिन्दू धर्म की निर्बलता	प्रो. भवानीलाल भारतीय	4.00
12.	बौद्ध और जैन मत	पं. मंजुनाथ शास्त्री	3.00
13.	वेद और ईसाई मत	श्री रामस्वरूपजी रक्षक	3.00
14.	इस्लाम और वैदिक धर्म	डा. श्रीराम आर्य	4.00
15.	सत्य का अर्थ तथा प्रकाश	प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले	3.00

आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

1.	आचार संहिता	1.00
2.	आर्य समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं	50.00
3.	हमारी राष्ट्रीयता का आधार	2.00
4.	देश धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन	1.00
5.	मेरी तीसरी विदेश यात्रा के संस्मरण	6.00
6.	आर्य शिक्षण संस्थाओं का भविष्य	5.00
7.	दा आर्य समाज (The Arya Samaj)	2.00
8.	आर्य शिक्षण संस्थाओं की परिचय निर्देशिका	12.00
9.	आर्य समाज का वर्तमान और भविष्य	10.00
10.	The Arya Samaj Hindu without Hinduism	125.00
11.	आर्य समाज के पुनर्गठन की आवश्यकता	8.00
12.	कर्मवीर पं. जियालाल का संक्षिप्त जीवन चरित्र	5.00

अन्य प्रकाशन

1.	आर्य समाज अजमेर का इतिहास	50.00
2.	सांस्कृतिक कार्यक्रम पथ दर्शिका	30.00
3.	अजमेर की आर्य शिक्षण संस्थायें	3.00
4.	धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) सैट (20% कमीशन)	100.00
5.	सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ माला (सैट) (20% कमीशन)	20.00

प्राप्ति स्थान **आर्य समाज अजमेर**

Scanned with CamScanner

ओ३म्

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला—भाग १२

बौद्ध और जैन मत

लेखक :

श्री मञ्जुनाथ शास्त्री, एम.ए., बी.एड., सिद्धान्त भूषण

पूर्व प्रधानाध्यापक,

डी.ए.वी. उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर

सम्पादक :

दत्तात्रेय (वाब्ले) आर्य

पू. प्रिंसिपल, दयानन्द स्नातकोत्तर कॉलेज, अजमेर

प्रकाशक : **आर्य समाज, अजमेर**

वर्ष 1999 | प्रतियाँ 2000 | मूल्य : 3.00 पैसे

Scanned with CamScanner

डॉ. सूर्यदेव शर्मा

आर्य सभाज के जाने माने विद्वान् और प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री तथा आर्य समाज अजमेर के दीर्घ कालीन यशस्वी मंत्री स्व. डॉ. सूर्यदेव शर्मा, शास्त्री, साहित्यालंकार, एम.ए., एल.टी.डी.लिट् ने 1981 में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के अवसर पर इस ग्रन्थ माला के प्रथम संस्करण के लिये 12 हजार रुपये तथा आर्यसमाज अजमेर की 1982 में शताब्दी के उपलक्ष्य में प्रकाशित द्वितीय संस्करण के लिए 10 हजार रुपये,इस प्रकार कुल 22 हजार (बाईस हजार रुपये) रुपये की राशि दान में देकर ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में अनुकरणीय सहयोग दिया है। आर्य समाज अजमेर और मैं उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

दत्तात्रेय (वाब्ले) आर्य

प्रधान

आर्य समाज, अजमेर

मुद्रक : श्री आर्य प्रिण्टर्स, केसर गंज, अजमेर

दूरभाष : 431464, 424850

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना

बौद्ध और जैन धर्मों का उद्‌गम स्थान भी भारत ही है। इतना ही नहीं, उनके अधिकांश मन्तव्य और सिद्धान्त वैदिक विचार धारा के परिवर्तित अथवा विकृत रूप हैं, जिनका हमारे प्राचीन ऋषियों ने दार्शनिक विवेचन किया है। ईश्वर, जीव, प्रकृत्ति और सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में जैन और बौद्ध दर्शन में विशेष अन्तर नहीं है। उन दोनों का प्रेरणा स्त्रोत भी वेद, ब्राह्मण और उपनिषद् में देखा जा सकता है। इसीलिये भी जैन और बौद्ध दर्शन का बौद्धिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है किन्तु जैसा कि विद्वान् लेखक ने बताया है कि दोनों मतों तथा 'चार्वाक्' को भी नास्तिक अर्थात् ईश्वर को न मानने वाले धर्मों की श्रेणी में माना जाता है उसका मुख्य कारण उनके द्वारा वेद में प्रतिपादित त्रैतवाद अर्थात् ईश्वर, जीव और प्रकृति के पृथक् और अनादि अस्तित्व को स्वीकार न करना है। वेदों से भिन्न जो सिद्धान्त उनके द्वारा प्रतिपादित किये गये हैं वे किसी प्रकार वैज्ञानिक विश्लेषण तथा बौद्धिक परीक्षण की कसौटी पर भी खरे नहीं उतरते, यह इस पुस्तिका में लेखक द्वारा स्पष्ट किया गया है।

लेखक की यह मान्यता भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि महावीर और बुद्ध दोनों के विचार वेदों के गहन अध्ययन पर आधारित न होकर तत्कालीन ब्राह्मणों द्वारा वेद के नाम पर किये जाने वाले व्यर्थ के और असंगत कर्म काण्डों के विरुद्ध प्रतिक्रिया पर आधारित हैं। यदि ऋषि दयानन्द के समान वे संस्कृत के विद्वान् होते और वेदों का स्वयं अनुशीलन करते तो सम्भवतः वे भी वेदों को अस्वीकार किये बिना उनके नाम पर होने वाले नर और पशु बलि तथा यज्ञादि में किये जाने वाले अनाचारों का विरोध करके परिष्कृत वैदिक धर्म का **प्रचार और प्रसार करने में समर्थ होते।** ऋषि दयानन्द ने वेद के नाम पर प्रचलित अन्ध विश्वासों, मूर्खतापूर्ण कर्मकाण्डों, हिंसामय यज्ञों तथा जात पांत, छुआछूत जैसे सामाजिक अन्याय का विरोध किया है, किन्तु गन्दे पानी के साथ बाल्टी को फेंकने के स्थान में उन्होंने **वेदों का तर्क** पूर्ण अर्थ करके जहाँ वेदों का उद्धार किया वहाँ पौराणिक हिन्दू समाज को उसकी धार्मिक और सामाजिक दुर्बलताओं से मुक्त करने का भी प्रयत्न किया है।

दत्तात्रेय आर्य

सम्पादक

Scanned with CamScanner

आचार्य धर्मवीर आर्य - 9029421718.
ई. वैदिक पुस्तकालय मुम्बई

।। ओ३म् ।।

बौद्ध और जैन मत

नास्तिक मत-दर्शन

(चार्वाक–बौद्ध–जैन)

भारतीय तर्क विद्या में छः दर्शन प्रसिद्ध हैं जिनमें वेदों को प्रमाण माना है तथा वेदोक्त सिद्धान्तों को तर्क की कसौटी पर कस कर विचार किया है अतएव इन्हें वेदों के उपांग कहा है। इनके अतिरिक्त तीन ऐसे दर्शन हैं, जिनमें न वेदों को प्रमाण माना है और न वेदोक्त सिद्धान्तों पर विचार ही किया है अपितु वेदों पर आक्षेप करते हुए अपने स्वतन्त्र सिद्धान्तों को तर्क से स्थापित किया है। इस दृष्टि से दर्शनों के दो भेद हुए वैदिक और अवैदिक। जहां वैदिक दर्शन सृष्टिकर्त्ता परमात्मा की सत्ता स्वीकार करते हैं वहां अवैदिक दर्शन उसकी सत्ता स्वीकार नहीं करते अर्थात् नास्तिक दर्शन हैं। ये तीन हैं चार्वाक, बौद्ध और जैन।

चार्वाक मत

बृहस्पति नामक व्यक्ति इस मत का प्रवर्त्तक हुआ है। उसका मन्तव्य था कि जो कुछ है यही लोक है। इसी को सुखी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए परलोक की प्राप्ति के लिए धन व्यय करना या परिश्रम करना बेकार है। इस विश्वास के साथ उसने अर्थ और काम को पुरुषार्थ माना और धर्म और मोक्ष विषयों का खण्डन किया।

Scanned with CamScanner

बृहस्पति का कथन था कि केवल प्रत्यक्ष ही प्रमाण है। उस पर आधारित अनुमान उपमान आदि प्रमाण नहीं हैं, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रसना त्वचा एवं मन इन छः इन्द्रियों से गम्य आन्तरिक एवं बाह्य वस्तुओं का ही अस्तित्व है। इनके अलावा सारे पदार्थ कल्पना मात्र हैं और प्रमाणगम्य न होने के कारण अप्रामाणिक हैं। अतः प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है।

पृथिवी, जल, अग्नि और वायु—ये चार तत्त्व हैं। इन्हीं के मेल से पृथिवी आदि लोक बने हैं और इन्हीं के मेल से तृण, घास, वृक्ष और शरीर होते हैं। इस प्रपंच में जो कुछ है सब इन्हीं के मेल से बना है।

उपर्युक्त चार तत्त्वों के विशिष्ट मेल से बने शरीर में चेतनता उत्पन्न हो जाती है और उस मेल के नष्ट होने से चेतनता भी नष्ट हो जाती है। इस तरह चैतन्य विशिष्ट देह ही आत्मा है। "मैं मोटा हूं, दुबला हूं" इत्यादि प्रतीति यह बताती है कि देह ही आत्मा है। देह के अलावा कोई आत्मा नहीं है।

जब देह ही आत्मा हुये तो वह मर कर न कहीं जाती है और न आता है, यहीं भस्म हो जाता है तो परलोक कैसा ?

ईश्वर कोई नहीं

कर्मों का साक्षी, फलदाता या सृष्टिकर्त्ता ईश्वर कोई नहीं है। यदि कोई दण्ड देने वाला है तो वह राजा ही है। तुम्हारे ईश्वर को किसी को दण्ड देते हुए किसी ने नहीं देखा। यदि राजा को ही ईश्वर कहो तो ठीक है। उसके अतिरिक्त किसी ईश्वर के अस्तित्व में कोई प्रमाण नहीं है।

परलोक

परलोक के बारे में बृहस्पति का कथन है कि न स्वर्ग है, न मोक्ष है, न ही आत्मा परलोक में जाने वाला है, न वर्ण और

Scanned with CamScanner

आश्रमादियों के कर्त्तव्य फलदायक हैं। अग्निहोत्र, तीनों वेद, त्रिदण्ड, भस्मधारण–ये सब बुद्धि और पुरुषार्थ रहित लोगों की जीविका के साधन हैं। ज्योतिष्टोम यज्ञ में मारा गया पशु यदि स्वर्ग जाता हो तो यजमान अपने पिता को मार कर क्यों नहीं स्वर्ग भेजता ? यदि मरे हुए लोगों के लिए श्राद्ध करने से उनको तृप्ति मिलती हो तो बाहर जाने वाले के लिए टिफिन भेजना बेकार है। घर में ही परोस कर किसी को खिलाने से तृप्ति हो जानी चाहिए। मरे हुए लोगों के लिए दान देने से उन्हें प्राप्त होता हो तो ऊपरी मंजिल पर बैठे हुए लोगों को क्यों नहीं प्राप्त होता ? जब तक रहो सुख से जीओ ऋण लेकर भी घी पियो, देह भस्म होने पर दुबारा नहीं आएगी। यदि देह से निकल कर आत्मा दूसरे लोक में जाता हो तो रिश्तेदारों के मोह से आकृष्ट होकर वह वापिस क्यों नहीं आता ? मरे हुए लोगों के लिए श्राद्धादि कार्यविधान ब्राह्मणों ने अपनी जीविका के लिए किया है।

दुःख युक्त होने के कारण विषयोपभोग वाला सुख त्याज्य है–यह विचार मूर्खो का है। क्योंकि कोई व्यक्ति "भूसे से भरे हुए हैं" कह कर, बासमती चावलों को फेंक नहीं देता है। भूसों को अलग कर जैसे भात बना कर खाया जाता है वैसे ही दुःख का परित्याग कर सुख का उपयोग करना चाहिए।

उपसंहार

स्वर्ग–नरंक और मोक्ष–इसी दुनियां में हैं। ऐश्वर्य ही स्वर्ग, कांटे आदि से उत्पन्न दुःख ही नरक एवं देह विनाश ही मोक्ष है। न कोई परलोक है और न उसके लिए कोई धर्म करने की आवश्यकता है। मिथ्या विश्वास को छोड़ कर लोक के सुख की प्राप्ति करो। अर्थ शास्त्रानुसार कमाना, काम शास्त्रानुसार भोगना और नीति शास्त्रानुसार बर्ताव करना–इसी में कल्याण है, यही

Scanned with CamScanner

पुरुषार्थ है। हमारा मत ही सच्चे अर्थ में व्यावहारिक है, लोक में फैला हुआ है अतः यह लोकायत मत कहलाता है।

समीक्षा—चार्वाक मतावलंबियों ने वेदों का अध्ययन नहीं किया था। वेदों के नाम पर वाममार्गियों की टीकाएं पढ़कर भ्रांति में पड़कर इस तरह वेद विरुद्ध बातें कही हैं। केवल प्रत्यक्ष प्रमाण मानना अव्यावहारिक है। आखिर, भूत कालीन बातों को प्रत्यक्ष कैसे कर सकेंगे ? तदर्थ आप्त प्रमाण मानना आवश्यक है। आजकल के कम्यूनिस्टों में और चार्वाकों में बहुत कुछ समानता है।

बौद्ध-मत

मत-प्रवर्त्तक

इस मत के प्रवर्त्तक का नाम था शाक्यमुनि गौतम। राजा शुद्धोदन के पुत्र सिद्धार्थ को यौवन में ही वैराग्य प्राप्त हुआ और वह अपने नवजात पुत्र, पत्नी और घर बार छोड़कर चल गये। बड़ी तपश्चर्या के पश्चात् उन्होंने बुद्धत्व पाया। बुद्ध द्वारा प्रवर्तित मत बौद्ध मत कहलाया।

बुद्ध का विश्वास

महात्मा बुद्ध का विश्वास था कि बाह्याडम्बर सब मिथ्या हैं। आत्मा की वस्तु धर्म सब के लिए बराबर है। जात पात का भेद नहीं सभी मनुष्य समान हैं। कर्मानुसार सबको फल मिलता है अतः मानव को शुद्ध संकल्प वाला होना चाहिए। अहिंसा ही परम धर्म है। पशु बलि पाप है, इस जगत् में सब अस्थिर है। दुःख की मूल तृष्णा को काटने से निर्वाण (मोक्ष) प्राप्ति होना है।

बौद्ध लोग प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण स्वीकार करते हैं। प्रत्यक्ष को भी सर्वात्मना प्रत्यक्ष नहीं मानते क्योंकि पहाड़ सामने दिखने पर भी पूर्ण रूप से दिखाई नहीं देता अतः अदृष्ट भाग का

Scanned with CamScanner

अनुमान लगा लेते हैं। इस तरह खण्ड प्रत्यक्ष हुआ। अनुमान वहाँ होता है जहाँ अविनाभाव हो। अविनाभाव का नियम तदुत्पत्ति और तादत्म्य (स्वरूप) – इन दो कारणों से जाना जाता है। धुआं अग्नि से ही उत्पन्न होता है अतः अग्नि के साथ धुएं का अविनाभाव सम्बन्ध है अर्थात् वह अग्नि के बिना हो ही नहीं सकता। इस तरह धुएं से अग्नि का अनुमान होता है। तादत्म्य में जैसे गोत्व पशुत्व के बिना नहीं हो सकता, इसीलिए गोत्व से पशुत्व का अनुमान होता है। इस तरह कार्य अपने कारण का तथा तत्स्वरूप अपने व्यापक स्वरूप का अनुमान कराता है।

चारों बौद्ध शाखाओं का खण्डन

महात्मा बुद्ध के बाद उनकी शिक्षा के दार्शनिक विवेचन में मतभेद उत्पन्न हुआ और उसके आधार पर (1) सौत्रान्तिक (2) वैभाषिक (3) योगाचार (4) माध्यमिक ये चार बौद्ध सम्प्रदाय उत्पन्न हुए।

यदि सब शून्य हो तो शून्य का जानने वाला शून्य नहीं हो सकता, अतः शून्य का ज्ञाता और ज्ञेय–इन पदार्थों का रहना परमावश्यक है अतः सब शून्य कहना अनुचित है।

योगाचार कहता है कि बाह्य शून्य है तो क्या पर्वत, वृक्ष आदि सब पदार्थ योगाचार सम्प्रदायवादी के अन्दर है ? यह सम्भव नहीं है इसलिए पर्वत बाहर है और उसका ज्ञान आत्मा में है।

सौत्रान्तिक किसी वस्तु को प्रत्यक्ष नहीं मानता। तो वह स्वयं और उसकी बात भी अनुमानगम्य होनी चाहिए, प्रत्यक्ष नहीं। यदि कोई प्रत्यक्ष ही न हो तो यह पुस्तक है, यह मनुष्य है ऐसे प्रयोग नहीं होने चाहिए अपितु यह पुस्तक का एक अंश है, मनुष्य का एक अंश है ऐसा प्रयोग होना चाहिए। एक अंश का नाम पदार्थ न होकर समुदाय का नाम पुस्तक है। यह पुस्तक कहना प्रत्यक्ष है

Scanned with CamScanner

अनुमान नहीं। क्योंकि सभी अवयवों में अवयवी एक है, उसके प्रत्यक्ष होने से पुस्तक के अवयव भी प्रत्यक्ष होते हैं।

बाह्य पदार्थों को प्रत्यक्ष मानने वाले वैभाषिकों का कथन भी ठीक नहीं। क्योंकि जहाँ ज्ञाता और ज्ञान होता है, वहीं प्रत्यक्ष होता है। प्रत्यक्ष का विषय बाहर होता है तथा तदाकार ज्ञान आत्मा को होता है।

जो पाँच स्कन्ध गिनाये हैं वे भी अपूर्ण है क्योंकि इस तरह विचारते रहने पर एक–एक के अनेक भेद होंगे और ये पाँच ही न रहकर बीसियों सकन्ध हो जाएंगे।

द्वादशायतन पूजा

श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा और नासिका ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय और वाक्, हस्त, पाद, गुह्य एवं उपस्थ–ये पांच कर्मेन्द्रिय, मन और बुद्धि इन बारह का सत्कार अर्थात् इन्हें आनन्द में प्रवृत्त रखना द्वादशायतन पूजा कहलाता है। इस पूजा से ही बौद्ध लोग मोक्ष प्राप्ति मानते हैं। अन्य की पूजा निष्प्रयोजक मानते हैं।

परन्तु इन दस इन्द्रियों की पूजा का अभिप्राय हुआ भोगों को भोगना। भोग में हर जगह रोगभय रहता है। यह पूजा हुई या रोगों को निमंत्रण देना हुआ ? इंद्रियों की स्वेच्छाचारिता से मुक्ति नहीं मिलेगी। दुःख से छूटकर सुख की प्राप्ति के लिए मनुष्य को प्रयत्न करना चाहिए तभी मुक्ति की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

बौद्ध लोग तीर्थंकरो को उपदेशक और लोकनाथ मानते हैं। अनादि, सृष्टिकर्ता, वेदोपदेष्टा परमात्मा को नहीं मानते यदि तीर्थंकर उपदेशक हैं तो उन्होंने उपदेश किससे पाया ? यदि कहो कि स्वयं पाया तो यह सम्भव नहीं क्योंकि बिना कारण के कार्य नहीं हो सकता। यदि बिना उपदेश पाये भी उपदेशक बने हों तो आज भी बिना पढ़े पढ़ाए, सुने सुनाए, ज्ञानी हो जाना चाहिए परन्तु होते नहीं हैं। अतः उस समय भी ये अपने आप ज्ञानी बने यह कहना

Scanned with CamScanner

उचित नहीं है।

जो वस्तु है उसका विनाश (शून्य रूप) नहीं होता अतः सर्व शून्य–यह जो बौद्धों का कथन है भ्रम पैदा करने वाला है।

वेद और ईश्वर से विरोध का फल

ऐसा प्रतीत होता है कि बौद्धों को वेद और ईश्वर से विरोध करने का फल मिला। पहले तो सारे संसार की दुःख रूपी भावना की, फिर द्वादशायतन पूजा लगा दी। क्या यह पूजा सांसारिक पदार्थों से बाहर की है ? जो मुक्ति देने वाली हो सके ? वास्तव में ये लोग वेद और ईश्वर की शरण छोड़कर भटक गये हैं।

बौद्ध साधुओं का वेश

मृगादिक चर्म, मूण्ड मुंडाए रहना, वलकल वस्त्र धारण, पूर्वाह्न 12 बजे से पहले भोजन, अकेले न रहना, रक्तवस्त्र धारण– यह बौद्ध साधुओं का वेश और आचरण है।

बौद्ध मत प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध ने वेद नहीं पढ़े थे और न संस्कृत का ही वे परिज्ञान रखते थे। उन्होंने केवल तर्क पर आधारित मत स्थापित किया। उसके अनुयायियों ने अपने प्रवर्त्तक की बात का समर्थन करते हुए वेदों का भी खण्डन किया है। इसका कुछ कारण तो यह भी था कि वेदों का सही ज्ञान उनके सामने नहीं रखा गया था। वेदों के नाम से पशुबलि, नरबलि आदि का यथेष्ट प्रचार था, उसका खण्डन करने के लिए ही बौद्धों ने वेदों का भी खण्डन कर दिया। यह उनका दोष था। वेदों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करके ही उन्हें आगे बढ़ना चाहिए था।

कालान्तर में बुद्ध को पौराणिकों ने विष्णु के दस अवतारों में से एक मानकर बौद्ध मत को अपने अंदर समाहित कर लिया। यह एक तरह से राजीनामा था।

Scanned with CamScanner

बौद्ध और जैन मत में बहुत सी समानताएं हैं। दोनों ही अनादि भगवान् को नहीं मानते, केवली या निर्वाण प्राप्त महापुरुषों को परमेश्वर मानते हैं। उन्हीं की मूर्तियों की पूजा करते हैं। हां, जैनी लोग अपने मत को अनादि सिद्ध करते हैं जब कि बौद्ध लोग अपना मत बुद्ध द्वारा प्रवर्तित मानते हैं । जैनियों में असंगत बातों का भण्डार भरा पड़ा है जब कि बौद्ध लोगों में ऐसी असंगत बातें उतनी मात्रा में नहीं मिलती।

जैनमत दर्शन

तीर्थंकर ऋषभदेव इस सिद्धान्त के प्रवर्त्तक हुए हैं। जैनी उन्हें नित्य सिद्ध पुरुष मानते हैं अतः अर्हन मुनि कह कर पुकारते हैं। उन्हीं के नाम से यह आर्हत–दर्शन कहलाता है।

जैन लोग कहते हैं कि जीव ही परमेश्वर हो जाता है। वे अपने मुक्ति प्राप्त तीर्थंकरों को ही परमेश्वर मानते हैं। अनादि परमेश्वर कोई नहीं है। जो रागादि दोषों से रहित, त्रैलोक्य में पूजनीय, यथावत् पदार्थों का वक्ता, सर्वज्ञ अर्हन् देव है वही परमेश्वर है। कोई सर्वज्ञ अनादि परमेश्वर प्रत्यक्ष नहीं है। जब ईश्वर में प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं तो अनुमान भी नहीं घट सकता क्योंकि एकदेश प्रत्यक्ष के बिना अनुमान भी नहीं हो सकता। जब प्रत्यक्ष और अनुमान नहीं तो आगम प्रमाण भी अनादि सर्वज्ञ परमात्मा का बोधक नहीं हो सकता।

खण्डन :– जो अनादि ईश्वर न होता तो "अर्हन्" देव के माता–पिता आदि के शरीर का सांचा कौन बनाता ? बिना संयोगकर्त्ता के यथायोग्य सर्वाऽवयवसम्पन्न, यथोचित कार्य करने में उपयुक्त शरीर बन ही नहीं सकता। और जिन पदार्थों से शरीर बना है उनके जड़ होने से स्वयं इस प्रकार की उत्तम रचना युक्त शरीर रूप नहीं बन सकते क्योंकि उन में यथायोग्य बनने का ज्ञान

Scanned with CamScanner

नहीं है। जो रागादि दोषों से युक्त होकर पश्चात् दोष रहित होता है वह ईश्वर कभी नहीं हो सकता। जीव का शरीर एकदेशी और परिमित गुण, कर्म, स्वभाव वाला होता है, वह सब विद्याओं में सब प्रकार यथार्थवक्ता नहीं हो सकता। क्या तुम जो प्रत्यक्ष पदार्थ हैं उन्हीं को मानते हो अप्रत्यक्ष को नहीं ? जैसे कान से रूप और आंख से शब्द का ग्रहण नहीं हो सकता वैसे ही योगाभ्यास और विज्ञान के बिना परमात्मा भी नहीं दीख पड़ता। शुद्धान्तःकरण, विद्या और योगाभ्यास से पवित्रात्मा, परमात्मा को प्रत्यक्ष देखता है। सृष्टि को देख स्रष्टा का अनुमान होता है। इसलिए अनुमान प्रमाण होने में सन्देह नहीं होना चाहिए। प्रत्यक्ष और अनुमान के होने से आगम प्रमाण भी सर्वज्ञ ईश्वर का बोधक हो जाता है। जैसे मनुष्यों में कर्त्ता के बिना कोई भी कार्य नहीं होता वैसे ही महत्कार्य का कर्त्ता के बिना होना सर्वथा असम्भव है। जब वैसा है तो ईश्वर के होने में मूढ़ को भी सन्देह नहीं हो सकता। इससे जैनों के प्रत्यक्षादि प्रमाणों से ईश्वर का खण्डन करना अनुचित है।

जैनियों के कुछ अन्य सिद्धान्त

प्रश्न :– ये कहते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापक नहीं है, जो सर्वव्यापक होता तो सब वस्तु चेतन क्यों नहीं होती ? और उत्तम, मध्यम, निकृष्ट क्यों हुई ? छुटाई बड़ाई न होनी चाहिये।

उत्तर :– व्याप्य और व्यापक एक नहीं होते किन्तु व्याप्य एकदेशी और व्यापक सर्वदेशी होता है। जैसे आकाश सब में व्यापक है और भूगोल और घटपटादि सब व्याप्य एकदेशी हैं। जैसे पृथिवी आकाश एक नहीं वैसे ईश्वर और जगत् एक नहीं है। जैसे सब घट पटादि में आकाश व्यापक है और घट पटादि आकाश नहीं है वैसे चेतन परमेश्वर सब में है और सब चेतन नहीं है। विद्यादि सद्गुण और सत्यभाषणादि कर्म सुशीलतादि स्वभाव के न्यूनाऽधिक होने से उत्तम, मध्यम, निकृष्ट और बड़े छोटे माने जाते हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न :– जगत् में ईश्वर एक नहीं, किन्तु जितने मुक्त जीव हैं वे सब ईश्वर हैं ?

उत्तर :– यह कथन सर्वथा व्यर्थ है, क्योंकि जो प्रथम बद्ध होकर मुक्त होता है वह पुनः बन्धन में अवश्य पड़ता है। क्योंकि वे स्वाभाविक सदैव मुक्त नहीं। जैसे तुम्हारे चौबीस तीर्थंकर पहले बन्धन में थे पुनः मुक्त नहीं। जैसे तुम्हारे चौबीस तीर्थंकर पहले बन्धन में थे पुनः मुक्त हुए फिर भी बन्धन में अवश्य गिरेंगे और जब बहुत से ईश्वर है तो जैसे जीव अनेक होने से आपस में लड़ते भिड़ते हैं वैसे ईश्वर भी लड़ा भीड़ा करेंगे।

जैनियों में असम्भव बातें

जैनियों की अनेक बातें ऐसी है जो सर्वथा असम्भव है।

1. यह संसार अनादि अनन्त है। न कभी इसकी उत्पत्ति हुई न कभी विनाश होता है।
2. पार्श्वनाथ का शरीर दो सौ धनुष लम्बा और बीस लाख वर्षों की आयु।
3. विमलनाथ का शरीर साठ धनुष लम्बा और साठ लाख वर्षों की आयु।
4. महावीर स्वामी का शरीर सात हाथ लम्बा और बहत्तर वर्षों की आयु।
5. अमरनाथ का शरीर तीस धनुष लम्बा और चौरासी सहस्र वर्षों की आयु। ये जैनियों मत चलाने वाले तीर्थंकरों में से हैं।
6. महावीर ने अंगूठे से पृथ्वी को दवाई उससे शेषनाग कंप गया।
7. दो इन्द्रियों वाले शंख, जूं, आदि का शरीर 12 योजन का जानना। वैसे ही कीड़ी मकोड़ादि तीन इन्द्रिय वालों का शरीर 3 कोश का जानना।

Scanned with CamScanner

इससे बुद्धिमान लोग विचार लेवें कि इतने बड़े शरीर और इतनी आयु मनुष्यादि देह का होना कभी सम्भव है ? इन्हीं जैनियों के गपोड़े लेकर जो पुराणियों ने एक लाख दश सहस्र और एक सहस्र वर्ष की आयु लिखा सो भी सम्भव नहीं हो सकता।

मूर्त्ति पूजा का प्रारम्भ

वास्तव में पहले हिन्दुओं में मूर्त्ति पूजा का प्रचलन नहीं था क्योंकि हिन्दूलोग (आर्य) भगवान को सर्व व्यापक और निराकार समझते थे परन्तु जैनियों ने अपने साकार तीर्थंकरों को ही भगवान मानते हुए उनकी मूर्त्तियाँ पूजना प्रारम्भ कर दिया। मूर्त्ति पूजा प्रारम्भ करने का श्लोक विवेकसार पृष्ठ 52 में लिखा है :–

जल चन्दन पुष्प धूपनैरथदीपाक्षतकैर्निवेद्यवस्त्रैः।
उपचारवरैर्वयं जिनेन्द्रान् रुचिरैरद्यमुदा यजामहे।।

अर्थात् हम जल, चन्दन, चावल, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, वस्त्र और अतिश्रेष्ठ उपचारों से जिनेन्द्र अर्थात् तीर्थंकरों की पूजा करें। इसी से हम कहते हैं कि मूर्त्ति पूजा जैनियों से चली है। उनकी देखा देखी हिन्दुओं ने भी मूर्त्ति पूजा करना शुरु कर दिया। जैनियों के निराडम्बर नग्न मूर्त्तियों के स्थान पर हिन्दुओं ने सजे धजे आडम्बरयुक्त मूर्त्तियाँ रखकर पूजना शुरू किया। इस तरह जैन–बौद्ध से विरासत में ली मूर्त्ति पूजा को हिन्दुओं ने परिमार्जित रूप देकर आडम्बरयुक्त बनाया। मन्दिरों में लाखों करोड़ों की सम्पत्ति एकत्र की। इस तरह हिन्दू जाति के लिए यह अभिशाप सिद्ध हुई।

जैनियों का मोक्ष

महावीर तीर्थंकर गौतमजी से कहते हैं कि ऊर्ध्वलोक में एक सिद्धशिला स्थान है। स्वर्गपुरी के ऊपर पैंतालीस लाख योजन लम्बी और उतनी ही पोली है तथा आठ योजन मोटी है। जैसे पोली

Scanned with CamScanner

का श्वेत हार वा गोदुग्ध है उससे भी उंजला है वह स्थान। सोने के समान प्रकाशमान और स्फटिक से भी निर्मल है। वह सिद्धशिला चौदहवें लोक की शिखा पर है और उस सिद्धशिला के ऊपर शिवपुर धाम है। जन्ममरणादि दोष रहित होकर वह मुक्तपुरुष आनन्द करते रहते हैं। वे पुनः जन्म मरण में नहीं आते, सब कर्मों से छूट जाते हैं। यह जैनियों की मुक्ति है।

समीक्षक :– विचारना चाहिए कि जैसे अन्य मत में वैकुण्ठ, कैलाश, गोलोक, श्रीपुर आदि पुराणी, चौथे आसमान में ईसाई, सातवें आसमान में मुसलमानों के मत में मुक्ति के स्थान लिखे हैं वैसे जैनियों की सिद्धशिला और शिवपुरी भी है। आर्य्यावर्त्तवासी जैनी लोग जिसको ऊँचा मानते हैं उसी को अमेरिका वाले नीचा मानते हैं। ऊँचा नीचा व्यवस्थित पदार्थ नहीं है। चाहे वह सिद्धशिला पैंतालीस लाख से दुगुनी नब्बे लाख कोश लम्बी होती तो भी वे मुक्त बन्धन में हैं क्योंकि उस शिला के बाहर निकलने से उनकी मुक्ति छूट जाती होगी। जैनियों की यह मुक्ति भी एक प्रकार का बन्धन है। ये जैनी भी मुक्ति विषय में भ्रम में फसे हैं। यह सच है कि बिना वेदों के यथार्थ अर्थबोध के मुक्ति के स्वरूप को भी नहीं जान सकते।।

पाखण्डों का मूल भी जैनमत है

जिस मनुष्य से जैन धर्म का कुछ भी अनुष्ठान न हो सके तो भी जैन धर्म सच्चा है अन्य कोई नहीं इतनी श्रद्धा मात्र से ही दुःखों से तर जाता है।

समीक्षक :– भला ! इससे अधिक मूर्खों को अपने मतजाल में फसाने की दूसरी कौन सी बात होगी ? क्योंकि कुछ कर्म करना न पड़े और मुक्ति हो ही जाये, ऐसा भून्दू मत कौन सा होगा ?

मृत्युपर्यन्त दुःख हो तो भी कृषि व्यापारादि कर्म जैनी लोग न करें क्योंकि ये कर्म नरक में ले जाने वाले हैं।

Scanned with CamScanner

समीक्षक :– अब कोई जैनियों से पूछे कि तुम व्यापारादि कर्म क्यों करते हो ? अगर इन कर्मों को छोड़ देते हो तो तुम्हारे शरीर का पालन पोषण भी न हो सके और तुम्हारे कहने से सब लोग छोड़ दें तो तुम सब क्या वस्तु खाके जीयोगे ? ऐसा अत्याचार का उपदेश करना सर्वथा व्यर्थ है। क्या करें विचारे ! विद्या सत्सङ्ग के विना जो मन में आया बक दिया।।

जिन मूर्त्तियों की पूजा सार है और इससे भिन्नमार्गियों की मूर्त्ति पूजा असार है। जो जिनमार्गियों की आज्ञा पालता है वह तत्वज्ञानी है, जो नहीं पालता है वह तत्वज्ञानी नहीं है।

समीक्षक :– वाह जी ! क्या कहना !! क्या तुम्हारी पाषाणादि जड़ मूर्त्तियां वैष्णवादिकों की मूर्त्तियों की तरह नहीं ? जैसी तुम्हारी मूर्त्तिपूजा मिथ्या है वैसी ही मूर्त्तिपूजा वैष्णावादिकों की भी मिथ्या है। तुम तत्वज्ञानी बनते हो और अन्यों को अतत्वज्ञानी बनाते हो इससे विदित होता है कि तुम्हारे मत में तत्वज्ञानी नहीं है।।

जो धर्म जैन धर्म से विरुद्ध हैं वे सब मनुष्यों को पापी करने वाले हैं। इसीलिये किसी के अन्य धर्म को न मानकर जैनधर्म को ही मानना श्रेष्ठ है।

समीक्षक :– इससे यह सिद्ध होता है कि सब से वैर, विरोध, निन्दा, ईर्ष्या आदि दुष्ट कर्मरूप सागर में डुबाने वाला जैन मार्ग है। जैसे जैनी लोग सब के निन्दक हैं वैसा कोई भी दूसरा मत वाला महानिन्दक और अधर्मी न होगा। क्या एक ओर से सबकी निन्दा और अपनी अतिप्रशंसा करना शठ मनुष्यों की बातें नहीं है ? विवेकी लोग तो चाहें किसी के मत के हों उन में से अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा कहते हैं।।



Scanned with CamScanner

हमारा प्रिय सत्यार्थप्रकाश

(1)

हमारे गुरु का आशीर्वाद, हमारे ऋषि का अमर विधान ।
मिटाकर जग का विषम विषाद, करेगा वही विश्व–कल्याण ।।
इष्ट फल देगा नित्य नवीन, कल्पपादप का पुष्पाभास ।
करे वह असत्–विचार विहीन, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश" ।।

(2)

निगम का आगम का अवतार, भव्य भावों का भुवि भण्डार ।
प्रेम के पथ का पारावार, ज्ञान का गुण का रम्यागार ।।
चमकते जिसमें रत्न अनेक, नित्य प्रति पाते विविध विकास ।
सत्य का सागर बस वह एक, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश"।।

(3)

विविध पंथों का तामस तोम, भरा था भू पर भ्रम भरपूर ।
अखिल आच्छादित था वर व्योम, न कर सकता था कोई दूर ।।
गगन में हुआ ज्ञान विस्फोट, किया अज्ञान अंधेरा नाश ।
असत् पर मारी भारी चोट, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश" ।।

(4)

किया द्रुत खण्ड खण्ड पाखण्ड, चलाकर तेज तर्क का तीर ।
आक्रमण हुआ प्रभूत प्रखण्ड, दम्भगढ़ गिरा सहित प्राचीर ।।
विलखते हैं मतवादी आज, करें कैसे किसकी अब आश ।
असत् पर गिरा गर्ज कर गाज, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश ।।

(5)

"सूर्य" में रहे रश्मियाँ सात, यहाँ चौदह पूरे उल्लास ।
"सूर्य" करता न प्रकाशित रात, सतत यह देता ज्ञान प्रकाश ।।
"सूर्य" पर छाते घन बरसात, ग्रहण में होता भारी ह्रास ।
किन्तु "सत्यार्थ" सदा अभिजात, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश" ।।

-: रचयिता :-

(डॉ० सूर्यदेव शर्मा शास्त्री, साहित्यालंकार, एम. ए. डी. लिट्,)

अजमेर

Scanned with CamScanner

सुन्दर, साहित्य और सस्ते साहित्य प्रचार की योजना में सहयोग दीजिए

आर्य समाज अजमेर के निष्ठावान् विद्वान् डॉ. सूर्यदेव जी की 22 हजार रूपयों की उदार सहायता के कारण आर्यसमाज अजमेर ने 50 हजार रुपये व्यय करके सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला के 15 भागों की 75 हजार प्रतियां (प्रथम संस्करण), लागत से भी कम मूल्य पर वितरित की हैं।

क. इसी ग्रन्थमाला के समान ऋषि दयानन्द तथा वैदिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में हिन्दी अंग्रेजी ट्रेक्सट।

ख. स्वामी जी के पत्र व्यवहार पर आधारित उनके कार्य और विचारों का संकलन।

ग. आर्य समाज अजमेर के गत 100 वर्षों का इतिहास जिसमें ऋषि दयानन्द के अन्तिम वर्षों से सम्बन्धित समाज के अभिलेखों से प्राप्त विवरण।

उपर्युक्त एवं आवरण पृष्ठ संख्या 2 पर लिखित साहित्य के प्रकाशन में आर्थिक सहायता देने वाले सज्जनों के संबंध में प्रत्येक पुस्तक में निम्न प्रकार से उनके प्रति आभार व्यक्त किया जावेगा।

* पाँच सौ रुपये से एक हजार रुपये तक दान देने वालों के नाम का उल्लेख।
* एक हजार रुपये से तीन हजार रुपये तक देने वाले दान दाताओं का संक्षिप्त परिचय।
* तीन हजार रु. से ऊपर देने वाले दान दाताओं का चित्र और परिचय।

दयानन्द शोध पीठ के प्रकाशन

दयानन्द स्नातकोत्तर कॉलेज में दयानन्द शोध पीठ की स्थापना हो चुकी है। प्रति वर्ष उसकी ओर से नियमित रूप से महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों पर महत्त्वपूर्ण शोध तथा उपयोगी साहित्य का प्रकाशन किया जा रहा है।

इसका उद्धृत साहित्य निम्न प्रकार है :—

		मूल्य
1	महर्षि दयांनन्द पत्रों के दर्पण में	50.00
2	नासीद सृष्टि विज्ञान एवं दशवाद रहस्य	
3	त्रयी विद्या	
4	सार्वभौम वैदिक धर्म	
5	महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं की प्रासंगिकता	

प्राप्ति स्थान – **आर्य समाज, अजमेर**

Scanned with CamScanner